मानक हिंदी वर्तनी

जयहिंदी संस्थान

1. विराम चिह्न के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग करें, न कि अंग्रेजी के फुल-स्टोप(.) का।

2. अंकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग करें — 1,2,3.... न कि हिंदी अंकों का - १,२,३।

3. सदा यी-ई वाली वर्तनी अपनाएं — गए, गई, हुए, लताएं, जाएंगे, लाए, लाई, इत्यादि, न कि गये, गयी, हुये, लतायें, लाये, लायी, इत्यादि।

4. नुक्ता का प्रयोग केवल ड और ढ में करें (पेड़, पढ़)। जमीन, कानून, जवाब, फाइल, गरीब आदि में नुक्ता नहीं लगाई जाती है, ये सब हिंदी के अपने शब्द हैं। तेरहवीं सदी के तुलसीदास तक ने इनमें से कुछ शब्दों का प्रयोग किया है जैसे गरीबनवाज, जमीन, कानून, आदि, और कहीं भी नुक्ता नहीं है। लेकिन आजकल उर्दू भी देवनागरी लिपि में लिखी जाने लगी है। देवनागरी में जब उर्दू लिखी जाती है, तब ज, ग, क, फ आदि में नुक्ता लगाया जाता है, लेकिन हिंदी में इन व्यंजनों में नुक्ता नहीं लगता है।

5. आजकल चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग नहीं होता है, उसकी जगह अनुस्वार (ं) चलता है। इससे वेब साइट आदि में सफाई आती है क्योंकि जब पंक्तियों के बीच जगह कम हो, नीचे की पंक्ति के शब्दों के चंद्रबिंदु ऊपर की पंक्ति के शब्दों की उ, ऊ, ऋ आदि मात्राओं से उलझ जाते हैं जिससे पाठ अपाठ्य हो जाता है। इसलिए लताएं, हां, हंस आदि लिखें, न कि लताएँ, हाँ, हँस इत्यादि। अधिकांश हिंदी पत्र-पत्रिकाओं और हिंदी प्रकाशकों ने इस नियम को अपना लिया है।

6. डाक्टर, आस्ट्रेलिया, फोकस आदि को उल्टा टोप (ॉ) लगाकर न लिखें। यह स्वर हिंदी का अपना नहीं है, अंग्रेजी के कुछ शब्दों में सही उच्चारण

दर्शाने के लिए गढ़ा गया है। व्याकरण इसके प्रयोग की सम्मति नहीं देता है। अब डाक्टर, आस्ट्रेलिया, फोकस आदि हिंदी के अपने शब्द बन गए हैं और हिंदी भाषी इन्हें ऐसे ही बोलते हैं। डाक्टर से तो डाक्टरनी स्त्रीलिंग रूप भी बन चुका है। इस तरह के विदेशी भाषाओं के शब्दों को हिंदी में लिखते समय हिंदी की उच्चारण पद्धति का ध्यान में रखना चाहिए और यदि आवश्यक हो, इनके वर्तनी को बदल देना चाहिए, न कि नए स्वर ईजाद करके भाषा को अपाठ्य बनाना चाहिए।

7. विद्वान, प्राचीन, पुस्तक, पुष्प आदि संस्कृत से आए शब्दों में हल चिह्न (्) न दें। हिंदी के सभी शब्द स्वतः ही व्यंजनांत हैं, उनमें हल चिह्न देना व्यर्थ है। ये सब शब्द हिंदी के अपने शब्द हो गए हैं और इन्हें बिना हल चिह्न के ही लिखा जाता है।

8. दुख हिंदी का अपना तद्भव शब्द है, इसे दुःख के रूप में न लिखें।

9. संक्षेपाक्षरों को जोड़कर लिखें, उनके अक्षरों के बीच रिक्त स्थान या बिंदी न रखें, यथा — भाजपा, न कि भा ज पा या भा.ज.पा., यूएसए न कि यू एस ए या यू.एस.ए., एचटीएमएल न कि एच टी एम एल या एच.टी.एम.एल., इत्यादि।

10. दुहरा, दुबारा दुपहर, दुतल्ला, दुपट्टा, दुअन्नी आदि सही हैं, इन्हें दोबारा, दोपहर, दोतल्ला, दोअन्नी आदि के रूप में न लिखें। हिंदी में संख्यावाचक प्रत्यय बनाते समय संख्यावाचक शब्द का ह्रस्वीकरण होता है — यथा एक — इक (इकतारा, इकन्नी, इकलौती) दो — दु (दुपहर, दुबारा, दुपट्टा, दुअन्नी) तीन — ति (तिपाया, तिकोना) चार — चौ (चौपाया) पांच — पंच (पंचमेल,

पंचवटी) छह — छि (छियासी, छिहत्तर) सात — सत (सतरंगा, सतफेरा) आठ — अठ (अठन्नी) नौ — नव (नवदीप)

कुछ उपयोगी संदर्भ ग्रंथ

कोश

1. फादर कामिल बुल्के का अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश, प्रकाशक — सुल्तान-चंद कंपनी, दिल्ली
2. बृहद वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली, दो खंड, प्रकाशक, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार।

व्याकरण

1. हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
2. हिंदी शब्दानुशासन, किशोरीदास वाजपेयी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
3. किशोरीदास वाजपेयी की अन्य भाषा संबंधी किताबें — हिंदी शब्द मीमांसा, हिंदी निघंटु, अच्छी हिंदी का नमूना, हिंदी वर्तनी और शब्द चयन, इत्यादि। ये सब अब वाणी प्रकाशन, दिल्ली से पुनः प्रकाशित हुई हैं। किशोरीदास वाजपेयी की रचनावली भी पांच खंडों में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई हैं जिसमें उपर्युक्त सभी किताबें शामिल हैं।

(समाप्त)